भारतीय ज्ञान परंपरा में संत कवियों का योगदान

06-07-2023

दिल्ली विश्वविद्यालय के श्यामलाल कॉलेज में गुरुवार को 'भारतीय ज्ञान परंपरा में संत कवियों का योगदान' विषय पर एकदिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय के मानविकी और सामाजिक विज्ञान के डीन प्रो. अनिल राय इस सेमिनार के मुख्य वक्ता थे। प्रो. अनिल राय ने भारत में ज्ञान की मौखिक और शास्त्र प्रदत्त परंपराओं की चर्चा करते हुए कहा कि वेद, उपनिषद, पुराण, व्याकरण, आयुर्वेद, योग, दर्शन, खगोल शास्त्र, संगीत आदि में ज्ञान की विशाल परंपरा मौजूद रही है। इसने भारत ही नहीं विश्व के ज्ञान को भी प्रभावित किया है। संत कवियों में ज्ञान की लोक परंपरा शामिल रही है। वे शास्त्र ज्ञान से असहमति जताते हुए भी उनसे बहुत कुछ ग्रहण करते हैं और लोक ज्ञान या अनुभूति से उपजे ज्ञान को महत्व देते हैं। शास्त्रों में वसुधैव कुटुम्बकम की चर्चा है। कबीर और दादू दयाल भी अपनी कविता से विश्व मानवतावाद की बात करते हैं। भारत में योग विद्या बहुत पुरानी है। संत कवियों ने हठयोग, कुंडलिनी जाग्रत करने की जो बात की है, वह उन्होंने परंपरा से ग्रहण की है। कबीर जीवन में संयम की बात करते हैं। धन संचय का विरोध करते हैं। यह सब हमारी परंपरा में है जिसे इन्होंने बहुत विस्तार दिया और मनुष्य को जीवन का नया पाठ सिखलाया। कबीर काल का भय दिखाकर करते हैं कि यह सब ठाठ यहीं रह जाएगा। यमदूत जब उठाकर ले जाएगा तब कोई ठाठ और धन काम नहीं आयेगा। जीवन संयम से सुन्दर बनता है। इन कवियों ने जाति, वर्ण, धर्म का विरोध किया क्योंकि ये भेदमूलक हैं। वे इससे ऊपर उठकर जीवन जीने की शिक्षा देते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए हिन्दी विभाग के प्रभारी डॉ. राजकुमार प्रसाद ने कहा कि भारत में ज्ञान की दो परंपरा शुरु से रही है। शास्त्र प्रदत्त ज्ञान और यथार्थ अनुभवपरक ज्ञान। यथार्थ अनुभवपरक ज्ञान लोक परंपराओं से जुड़ी है और व्यक्तिपरक अनुभूति की उपज है। कबीर जब कहते हैं कि 'तू कहता कागद लेखी / मैं कहता आंखिन देखी' तो उनका आशय अनुभूतिपरक यथार्थ ज्ञान से है। कबीर जब कहते हैं कि हर घट में राम बसे हैं यानी सभी मनुष्य के ह्रदय में ईश्वर का बास है तो सभी मनुष्य बराबर हैं। न कोई ऊंचा है, न कोई नीच है। मनुष्य की समता की बात संत कवियों की बड़ी देन है।

कॉलेज के प्राचार्य प्रो. रबी नारायण कर ने कहा कि संत कवियों ने अखिल भारतीय स्तर पर ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया और हमें नयी सीख दी है जिसे जीवन में अपनाने की जरूरत है। लगभग 80 ववद्यार्थी–शोधार्थमयों ने भी इस सेमीनार में उपस्थित थे।